भारत सरकार
मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय
पशुपालन और डेयरी विभाग
लोकसभा
अतारांकित प्रश्न संख्या- 3580
दिनांक 17 दिसंबर, 2024 के लिए प्रश्न

गैर-गोजातीय दूध

3580. श्री एस. जगतरक्षकन:
श्रीमती संजना जाटव:

क्या **मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या गैर-गोजातीय दूध अपने चिकित्सीय, औषधीय गुणों, इंसुलिन और कम लैक्टोज वाले गुणों और मवेशियों पर होने वाले व्यय की तुलना में सस्ती खेती के कारण, भविष्य में देश में मुख्य दूध हो सकता है; और

(ख) सरकार द्वारा बकरी, भेड़, ऊंट, गधे, याक आदि जैसी गैर-गोजातीय पशु-प्रजातियों के दूध के अनेक चिकित्सीय गुणों का पता लगाने के लिए की जाने वाली प्रस्तावित पहलों का ब्यौरा क्या है?

उत्तर
मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री
(श्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह)

(क) पोषणिक और चिकित्सीय गुणों के कारण गैर-बोवाइन दूध में अपार संभावनाएं हैं। विकसित देशों में, अधिकांश दूध गायों से उत्पादित किया जाता है। भारत में विभिन्न पशु दूध का उत्पादन करते हैं। भेड़, बकरी, ऊँट और गधे से उत्पादित दूध में पोषक मूल्य होने और उससे स्वास्थ्य लाभ होने का दावा किया जाता है। इसलिए, भारत गैर-बोवाइन दूध के वैश्विक बाजार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। देश की खाद्य नियामक संस्था भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) ने गाय और भैंस के दूध के अलावा बकरी, भेड़ और ऊंट के दूध के लिए भी मानक तय किए हैं।

(ख) पशुपालन और डेयरी विभाग, भारत सरकार राष्ट्रीय पशुधन मिशन नामक एक योजना कार्यान्वित कर रहा है। इस योजना के तहत विभाग भेड़, बकरी, ऊँट और गधे के लिए उद्यमिता विकास कार्यक्रम (ईडीपी) कार्यान्वित कर रहा है, जिसके लिए व्यक्तियों, किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ), किसान सहकारी संगठनों (एफसीओ), स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी), संयुक्त देयता समूह (जेएलजी) और धारा 8 के तहत आने वाली कंपनियों को 50 लाख रुपये तक की सब्सिडी प्रदान की जाती है। एनएलएम योजना के तहत इन प्रजातियों के लिए नस्ल उन्नयन कार्यक्रम भी चलाया जाता है। यह योजना भेड़, बकरी, गधे, ऊँट और अन्य गैर-बोवाइन पशुधन और पशुधन उत्पादों की उन्नति के लिए अनुसंधान कार्यकलापों और नवाचारों को प्रोत्साहित करती है।

इस क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करने और आगे के अवसरों को तलाशने लिए, पशुपालन और डेयरी विभाग, भारत सरकार ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद- केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीआईआरजी) के साथ मिलकर बकरी क्षेत्र और बकरी के दूध के संवर्धन के लिए नवंबर, 2024 में आईसीएआर-सीआईआरजी, मखदूम, मथुरा में राष्ट्रीय बकरी मेला और प्रदर्शनी और राज्यों, आईसीएआर संस्थानों, गैर-सरकारी संगठनों के साथ आगरा में हितधारकों की बैठक का आयोजन किया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद- केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीआईआरजी) ने बकरी के दूध के संघटनात्मक गुणों पर कुछ शोध कार्य किया है। बकरी के दूध की पोषण संबंधी प्राफोइलिंग की गई, जिसमें विशेष रूप से फैटी एसिड, अमीनो एसिड और खनिज प्रोफाइल का मूल्यांकन किया गया है और बकरी के दूध में पोषण और जैव सक्रिय घटकों की मात्रा को और बढ़ाने के प्रयास किए गए हैं।

पशुपालन और डेयरी विभाग, भारत सरकार खाद्य एवं कृषि संगठन, भारत (एफएओ, भारत) और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय ऊष्ट्र अनुसंधान केंद्र (आईसीएआर-एनआरसीसी) के सहयोग से ऊंट के दूध सहित ऊंट क्षेत्र पर दिसंबर, 2024 में बीकानेर, राजस्थान में हितधारकों की बैठक आयोजित कर रहा है। इसके अलावा, फरवरी, 2025 में भेड़ विकास पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकनगर में हितधारकों की बैठक प्रस्तावित की गई है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय ऊष्ट्र अनुसंधान केंद्र (आईसीएआर- एनआरसीसी) ऊंट के दूध के चिकित्सीय गुणों की पुष्टि करने, गैर-बोवाइन प्रजातियों के दूध से बायो-मॉलिक्यूल्स के लक्षण-निर्धारण, क्रोनिक पलमोनरी ट्यूबरकुलोसिस में सहायक चिकित्सा के रूप में ऊँट के दूध/दूध-उत्पादों की चिकित्सीय क्षमता का मूल्यांकन करने, डेंगू बुखार से पीड़ित मानव रोगियों में सहायक चिकित्सा के रूप में ऊंट के पाश्चुरीकृत दूध के पूरक के नैदानिक महत्व का मूल्यांकन करने, आमाशय में घाव (गैस्ट्रिक अल्सर) ठीक करने में ऊंट के किण्वित दूध के प्रभाव के मूल्यांकन के लिए अध्ययन कर रहा है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद- राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केंद्र (आईसीएआर-एनआरसीई) ने "किसानों की आय बढ़ाने के लिए गधा पालन का सटीक मॉडल स्थापित करना और गधी के दूध के चिकित्सीय तथा कॉस्मेटिक गुणों की खोज" और "गधी की खीस (कोलोस्ट्रम) और परिपक्व दूध की अति-गहन संगठनात्मक विशेषताओं के लिए एकीकृत विश्लेषण" नामक परियोजना प्रारंभ की है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद- राष्ट्रीय याक अनुसंधान केंद्र (याक पर आईसीएआर-एनआरसी) ने आईआईटी रुड़की के सहयोग से याक के दूध की चिकित्सीय क्षमता के आकलन के लिए परियोजनाएं और योजनाएं शुरू की हैं।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद- केंद्रीय भेड़ और ऊन अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीएसडब्ल्यूआरआई) ने पाटनवाड़ी भेड़ों के आनुवंशिक सुधार और डेयरी भेड़ों के रूप में संवर्धन के लिए कदम उठाए हैं। भेड़ के दूध के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए, आईसीएआर-सीएसडब्ल्यूआरआई ने संस्थान में पाटनवाड़ी भेड़ झुंड की स्थापना की है और चयनात्मक प्रजनन के माध्यम से पाटनवाड़ी भेड़ों के डेयरी भेड़ों के रूप में आनुवंशिक सुधार के लिए अनुसंधान कर रहा है।

उपरोक्त सभी शोध ऐसे गैर-बोवाइन दूध के विपणन के लिए मूल्य श्रृंखला स्थापित करने में मदद करेंगे।

*****